RESEARCHERID
THOMSON REUTERS

[FRTSSDS- June 2018]
DOI: 10.5281/zenodo.1342628

ISSN 2348 – 8034
Impact Factor- 5.070

GLOBAL JOURNAL OF ENGINEERING SCIENCE AND RESEARCHES

र्यावरण प्रदूषित क्षेत्र तथा कम प्रदूषित क्षेत्र के विद्यालयों के विद्यार्थियों की सामाजिक व्यवहार पर पर्यावरण प्रदूषण से पड़ने वाले प्रभावों का तुलनात्मक अध्ययन

बबीता दत्त, सहायक प्राध्यापक,
क्रिश्चियन एमीनेंट महाविद्यालय, इन्दौर

सारांश

प्रस्तुत शोध पर्यावरण प्रदूषित क्षेत्र तथा कम प्रदूषित क्षूत्र के विद्यालयों के विद्यार्थियो के सामाजिक व्यवहार पर पर्यावरण प्रदूषण के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन किया गया। प्रतिदर्ष के रुप में कुल 430 विद्यार्थियों को जो उच्चतर माध्यमिक कक्षा के 11 वी के थे तथा उनकी उम्र 17 वर्ष के लगभग थी। शोधार्थी द्वारा सामाजिक व्यवहार परीक्षण जो व्यवहार मापनी डॉ. अशोक शर्मा जयपुर द्वारा निर्मित तथा साक्षात्कार उपकरण का प्रयोग किया गया। प्रदत्त विश्लेषण हेतु माध्यमान, प्रमाणिक विचलन, प्रतिशत तथा क्रांतिक अनुपात की गणना की गई। पर्यावरण प्रदूषित क्षेत्र तथा कम प्रदूषित क्षेत्र के विद्यालयों के विद्यार्थियों की सामाजिक व्यवहार में सार्थक अंतर पाया गया।.

ɷ प्रस्तावना

पर्यावरण शब्द दो शब्दों 'परि' तथा 'आवरण' से मिलकर बना है। 'परि' का अर्थ होता है 'चारो तरफ' तथा 'आवरण' का अर्थ 'ढके हुए' से है। अतः पर्यावरण आशय मानव अथवा जीवधारी के चारों ओर पाये जाने वाले उस आवरण से है जिसमें रहकर जीव विशेष रुप से अपना जीवन यापन करता है। दूसरे शब्दों में पर्यावरण से आषय उस समूची भौतिक एवं जैविक अवस्था से है जिसमें जीवधारी निवास करते है तथा वृद्धि कर अपनी स्वभाविक प्रवृत्तियों का विकास करते है। पृथ्वी मानव का निवास क्षेत्र है मानव जाति पृथ्वी पर स्वयं अकेले जीवित नहीं रह सकती क्योंकि मानव को अपनी खाद्य एवं अन्य आवश्यकताओं के लिए पृथ्वी के अन्य जीवधारियों पर निर्भर रहना पड़ता है। अतः हम केवल मानव के पर्यावरण का अध्ययन न कर पृथ्वी पर मिलने वाले समस्त जीवधारियों के पर्यावरण का अध्ययन करते हैं। पर्यावरण का स्वस्थ होना सम्पूर्ण जीवधारियों के लिए आवष्यक है। मशीनों का अंधाधुन प्रयोग तथा जनसंख्या वृद्धि ने पर्यावरण में गिरावट ला दी है जिसने पर्यावरण प्रदूषण को जन्म दिया है। साधारण भाशा में कुछ वस्तुओं का गलत समय पर गलत मात्राओं में गलत स्थानों पर पाया जाना पर्यावरण का प्रदूषण कहलाता है। पर्यावरण प्रदूषण के कई कारण है जो मानवीय क्रियाओं का ही परिणाम है जैसे औद्योगिक क्रांति, अनियंत्रित जनसंख्या, वनों की अंधाधुध कटाई, औद्योगिक कारखानों, ताप बिजली घरों, विभिन्न वाहनों, भट्टियों, विद्युत जनरेटरों की बाढ़, अत्यधिक मात्रा में हानिकारक गैसे तथा धुल–धुएँ वायुमण्डल में उगलते जा रहे है। जिससे मानव तथा सभी जीवधारियों का स्वास्थ्य स्तर गिरता चला जा रहा है। पर्यावरण प्रदूषण सभी दिषाओं में हो रहे हे जैसे वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, मृदा प्रदूषण, ध्वनी प्रदूषण, आणविक प्रदूषण आदि।

सामाजिक व्यवहार एक व्यवहार है जिसके अध्ययन में सामाजिक मनोवैज्ञानिकों ने काफी रूची दिखाई है। मनोविश्लेषणवादियों तथा मानव विज्ञान वादियों का मानना है कि साधारण तथा असाधारण व्यवहार शैषवकाल से ही निश्चित होने लगती है। इसमें माता पिता द्वारा नियंत्रण की सीमा, माता–पिता का शिक्षित होना, उनकी अभिवृत्तियॉं, परिवार के आदर्श, परिवार में सदस्यों की संख्या आदि बालक के व्यवहार को बचपन से ही प्रभावित करती है। ये विशेषताएं जन्मजात नहीं होती वृद्धि एंव विकास के अन्य पहलुओं की तरह ही सामाजिक गुण भी बच्चों में धीर–धीरे पनपते है। इस प्रकार **सोरेन्सन** ने स्पष्ट किया है कि सामाजिक व्यवहार दुसरों के साथ भलीभॉंति चलने की योग्यता से है। इसमे बालक के सामाजिक योग्यताओं और कौशल में बढ़ोत्तरी होती है। इन बड़ी योग्यताओं तथा कौषल के सहारे व सामाजिक संबंधों को अच्छी तरह निभाने में कुशल बनता चला जाता है। वह अपने व्यवहार में वांछित परिवर्तन लाने की चेश्टा करता है तथा दुसरों के साथ समायोजन करने और हिलमिल कर प्रेम से रहने की लालसा रखता है।

पर्यावरण का प्रभाव सभी जीवधारियों पर पड़ता है शोध विषयानुसार पर्यावरण प्रदूषण का प्रभाव विशेष रुप से विद्यार्थियों के स्वास्थ्य, अनुशासन, व्यक्तित्व, शिक्षा तथा व्यवहार पर भी पड़ता है। प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रुप से इसका प्रभाव व्यक्ति, परिवार, समाज, राज्य, राष्ट्र तथा विश्व पर भी पड़ता है। इसी कारण शोधार्थी ने प्रस्तुत शोध विषयपर्यावरण पर्यावरण प्रदूषित क्षेत्र तथा कम प्रदूषित क्षेत्र के विद्यालयों के विद्यार्थियों की सामाजिक व्यवहार पर पर्यावरण प्रदूषण से पड़ने वाले प्रभावों का तुलनात्मक अध्ययन पर शोधपत्र प्रस्तुत करने का निर्णय लिया।

[FRTSSDS- June 2018]
DOI: 10.5281/zenodo.1342628
ISSN 2348 – 8034
Impact Factor- 5.070

पूर्व शोध कार्य

– मिश्रा सी. (1998) उच्चतर माध्यमिक स्तर पर विज्ञान एवं कला संकाय के विद्यार्थियों की पर्यावरणीय जागरुकता एवं अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन
– कटारे डी.के. (1999) माध्यमिक विद्यालय के शहरी एवं ग्रामीण छात्रों में पर्यावरणीय अभिवृत्ति तथा जागरुकता का तुलनात्मक अध्ययन
– मिश्रा एस. (2002–03) जबलपुर जिले के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र–छात्राओं में पर्यावरण मूल्यों का अध्ययन करना।
– अग्रवाल एस. (2004) उच्चतर माध्यमिक स्तर पर छात्राओं में प्राकृतिक संशाधन संरक्षण के प्रति अवचेतना का अध्ययन।

पूर्व अध्ययन का सिंहावलोकन करने पर ज्ञात हुआ कि पर्यावरण जागरुकता एवं अभिवृत्ति पर्यावरण मूल्यों, प्राकृतिक संसाधन एवं संरक्षण विषयों पर ही शोधकार्य हुए है। प्रस्तुत शोध मे लिये गये चरो पर पूर्व शोध नहीं हुए इसलिए शोधार्थी द्वारा यह विषय चुना गया विषय निम्न है–पर्यावरण प्रदूषित क्षेत्र तथा कम प्रदूषित क्षेत्र के विद्यालयों के विद्यार्थियों की सामाजिक व्यवहार पर पर्यावरण प्रदूषण से पड़ने वाले प्रभावों का तुलनात्मक अध्ययन।

उद्देश्य
पर्यावरण प्रदूषित क्षेत्र तथा कम प्रदूषित क्षेत्र के विद्यालयों के विद्यार्थियों की सामाजिक व्यवहार पर पर्यावरण प्रदूषण से पड़ने वाले प्रभावों का तुलनात्मक अध्ययन

परिकल्पना
पर्यावरण प्रदूषित क्षेत्र तथा कम प्रदूषित क्षेत्र के विद्यालयों के विद्यार्थियों की सामाजिक व्यवहार में सार्थक अन्तर नहीं पाया जायेगा।

विधि
प्रस्तुत शोध जबलपुर में किया गया जिसमें 10 शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों का चयन उददेश्यपरक प्रतिचयन विधि से किया गया जिसमें से 5 विद्यालय प्रदूषित क्षेत्र तथा अन्य 5 कम प्रदूषित क्षेत्र से लिये गये। ये सभी विद्यार्थी कक्षा 11वी में अध्ययनरत थे तथा इनकी आयु लगभग 17 वर्ष थी।

उपकरण
विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार पर पर्यावरण प्रदूषण के प्रभाव की जॉच हेतु सामाजिक व्यवहार मापनी डॉ. अषोक शर्मा, जामडोली, जयपुर द्वारा निर्मित प्रमाणिकृत मापनी का चयन किया गया । अन्य परीक्षण जैसे जल श्रोतों (बोरिंग या हेंडपम्प) का जल प्रदूषण परिक्षण प्रयोगशाला में करवाया गया। ध्वनि तथा खाद्य प्रदूषण परीक्षण हेतु साक्षात्कार उपकरण का निर्माण तथा प्रयोग किया गया।

प्रविधि
प्रस्तुत शोध में जबलपुर शहर के दस विद्यालयों के कुल 430 विद्यार्थियों का प्रतिदर्श लिया गया जिनमें 215 विद्यार्थी कम प्रदूषित क्षेत्र एवं शेष 215 विद्यार्थी प्रदूषित क्षेत्र से थे। जल प्रदूषण की जानकारी हेतु विभिन्न प्रदूषित क्षेत्र तथा कम प्रदूषित क्षेत्र के 10 विद्यालयों के जलश्रोतो के जल का प्रतिदर्ष लेकर प्रयोगशाला में जॉच करवाया गया।

सामाजिक व्यवहार एवं साक्षात्कार उपकरण के द्वारा प्रदत्तों का एकत्रीकरण तथा सांख्यिकी विश्लेषण करके पर्यावरण प्रदूषण का सामाजिक व्यवहार पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन प्रमाणिक विचलन, प्रतिशत तथा क्रांतिक अनुपात की गणना की गई।

विष्लेषण एवं निष्कर्ष

प्रस्तुत तालिका में प्रदूषित तथा कम प्रदूषित क्षेत्र के विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार के प्राप्तांको का परिणाम है:–

तालिका

क्र.	समूह	N	सामाजिक व्यवहार परीक्षण प्रतिषत	
			Good	Very Good
1	प्रदूषित क्षेत्र	215	9.30	90.67
2	कम प्रदूषित क्षेत्र	215	0.93	99.06

RESEARCHERID
THOMSON REUTERS

[FRTSSDS- June 2018] ISSN 2348 – 8034
DOI: 10.5281/zenodo.1342628 Impact Factor- 5.070

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि सामाजिक व्यवहार की दो श्रेणिया है Goodएवं Very Goodप्रदूषित क्षेत्र के विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार की श्रेणी Good में 9.30 प्रतिशत विद्यार्थी है जबकि कम प्रदूषित क्षेत्र की श्रेणी Goodमें 0.93 प्रतिशत विद्यार्थी है जिसमे सार्थक रुप से अंतर है।

इसी प्रकार श्रेणी Very Goodमें प्रदूषित क्षेत्र के विद्यार्थियों के कुल प्रतिशत 90.67 तथा कम प्रदूषित क्षेत्र के Very Goodमें 99.06 प्रतिशत विद्यार्थी है जिसका मान प्रदूषित क्षेत्र से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना प्रदूषित एवं कम प्रदूषित क्षेत्र के विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार में सार्थक अन्तर नहीं पाया जायेगा।स्वीकृत नहीं कि जाती यहां दोनों मानों में सार्थक अन्तर है अर्थात कम प्रदूषित क्षेत्र के विद्यार्थियों का सामाजिक व्यवहार प्रदूषित क्षेत्र के विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार से सार्थक रुप से उच्च है अतः प्रदूषण का प्रभाव विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार पर पड़ता है।
अतः प्रदूषित क्षेत्र के विद्यार्थियों तथा कम प्रदूषित क्षेत्र के विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार में अंतर पाया गया।

प्टण सुझाव

निष्कर्ष से विदित होता है कि पर्यावरण प्रदूषण से विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार प्रभावित होती है। अतः विद्यार्थियों को पर्यावरण तथा पर्यावरण प्रदूषण के प्रति जागरुकता हेतु पर्यावरण शिक्षा तथा उससे संबंधित सामाजिक व्यवहार की गतिविधियां जैसे प्रोजेक्ट वर्क, पोस्टर प्रतियोगिता, मॉडल प्रतियोगिता, भ्रमण, खेल एन.सी.सी., एन.एस.एस., सामाजिक समारोहों में भागीदारी, अतिथि देवो भवः एवं सहानुभूमि का पाठ की व्यवस्था की जानी चाहिए।

संदर्भ

- डॉ. श्रीवास्तव डी.एन., सामाजिक मनोविज्ञान आगरा,– नवम् संस्करण : साहित्य प्रकाशान।
- डॉ. त्रिपाठी लालबच्चन, (1992) आधुनिक सामाजिक मनोविज्ञान – प्रथम संस्करणः हरप्रसाद भार्गव.
- गोयल एम.के., (2007) पर्यावरण षिक्षण आगरा – विनोद पुस्तक मंदिर।
- मंगल एस.के., (2008) षिक्षा मनोविज्ञान नई दिल्ली –प्रेंटिस हॉल ऑफ इण्डिया प्रा.लि.।
- भटनागर सुरेा एवं सक्सेना, अनामिका, (2005) शिाखा मनोविज्ञान मेरठ – लॉयल बुक डिपो।
- गैरट, हेनरी ई., (1989) शिक्षा एवं मनोविज्ञान में सांख्यकीः कल्याणी पब्लिशर्स।

वैबसाईट

www.ugc.ac.in
www.siksha.com